ISSN 0974-9012

INDIAN JOURNAL OF SOCIAL ENQUIRY

A Peer Reviewed Publication

Volume 10 Number 3 September 2018 Rs. 200

The Nation and its Women: Representation of Women in Bangla Plays of the Partition Era
Debosmita Paul Lahiri

Role of Folk Songs for Peaceful Living Among the Zeme Tribes of Assam
Kingaule Newme

Locating Women in the Patriarchal Society Through the lens of Feminist Theory and Criticism
Nabanita Deka

Changing Socio-Political Dynamics of Delhi: Role of Migrants
Sanjeev Kumar Tiwari

The Althea Gibson Narrative and Race, Class, and Gender in the Twentieth Century America
Rajendra Parihar

Augmenting Pedagogical Practices Through Innovative Technological Interventions
Maneesha, Praveen Kant Pandey & Tripti Gupta

The Status and Role of English Language in Contemporary Times: A Paradox of Demand and Mistrust
Ruchi Kaushik

Development Administration: A Conceptual Understanding
Sanjay Kumar Agrawal

Indian Journal of Social Enquiry

Editorial Advisory Board

Prof. Yogesh Atal, *Former Principal Director, Social and Human Sciences, UNESCO*

Prof. Subrata Mukherjee, *Former Head, Dept. of Political Science, University of Delhi*

Prof. N. K. Jha, *Vice-Chancellor, Bhagalpur University, Bihar*

Mr. Rick Rodgers, *Managing Director, The Reserch Network, Virginia, USA*

Prof. Priyankar Upadhyay, *Director Malviya Centre for Peace Research, BHU*

Prof. S. N. Sharma, Patna University

Editor : Dr. Gitanjali Chawla

Editorial Board : Dr. Niraj Kumar
Dr. Deepa Sharma
Dr. Raj Hans
Ms. Sonia Sachdeva
Dr. Sudhir K Rinten

Production Editor : Mr. Raj Kumar

A Peer Reviewed Publication of

MAHARAJA AGRASEN COLLEGE

University of Delhi

Vasundhara Enclave, Delhi - 110096 Phone : +91-11-22610552, 22610562

Website : mac.du.ac.in

© Indian Journal of Social Enquiry
The views expressed are those of the authors.

Contents

1. **The Nation and its Women: Representation of Women in Bangla Plays of the Partition Era** 7

Debosmita Paul Lahiri

2. **Role of Folk Songs for Peaceful Living Among the Zeme Tribes of Assam** 16

Kingaule Newme

3. **Locating Women in the Patriarchal Society Through the lens of Feminist Theory and Criticism** 28

Nabanita Deka

4. **Changing Socio-Political Dynamics of Delhi: Role of Migrants** 37

Sanjeev Kumar Tiwari

5. **The Althea Gibson Narrative and Race, Class, and Gender in the Twentieth Century America** 48

Rajendra Parihar

6. **Augmenting Pedagogical Practices Through Innovative Technological Interventions** 64

Maneesha, Praveen Kant Pandey & Tripti Gupta

7. **The Status and Role of English Language in Contemporary Times: A Paradox of Demand and Mistrust** 72

Ruchi Kaushik

8. **Development Administration: A Conceptual Understanding** 80

Sanjay Kumar Agrawal

Role of Folk Songs for Peaceful Living Among the Zeme Tribes of Assam*

Kingaule Newme

Abstract

The importance of traditional folk media cannot be overlooked in this era. It can contribute to social change, societal reconciliation and reduce conflict. The oral tradition is kept alive through folk tales and folk songs which can help build peace efforts through its thought provoking tales and songs that help in maintaining peace within the community and with the neighbours. In India, traditional folk media is recognized as a potential alternative media to connect with the rural masses and to convey messages at the grassroot level. Despite rapid technological advancement, traditional folk media has not lost its stand till today. It represents the traditional way of life of a community based on customs, beliefs and arts that make up a distinctive culture allowing the whole community to be a part of it, irrespective of caste or creed which builds peace and harmony in the society. Since time immemorial, different cultures have used folk songs as an important means of communication. Among the Zeme Naga community, folk songs have been playing a crucial role in social communication. It is considered to be the most important means of communication which helps in bringing change in an individual and in a community. The folk songs speak about the history, narrate the stories of past incidents, heroic deeds, tragedy, peaceful living, oneness etc. which serves as a lesson to the present generation. This paper will attempt to study the role and importance of folk songs of the Zeme Nagas in peacemaking and reducing further conflict through selected folk songs.

Keywords: *Folk songs, Peacemaking, Traditional folk media, Zeme Nagas*

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172

ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

Contents

- **संत रविदास : मन चंगा तो कठौती में गंगा** 1-5
  डॉ. विमल कुमार लहरी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **हिन्दू धर्म में पर्यावरणीय चेतना** 6-10
  डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय, पीएच.डी., वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

- **डॉ. अम्बेडकर का राजनीतिक दर्शन** 11-14
  देवेश कुमार त्रिपाठी, शोध छात्र, धर्म एवं दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रमः एक समाजशास्त्रीय मूल्याकन** 15-22
  नेहा मौर्य, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

- **स्टेंसिल से सैरीग्राफी तक : माध्यम और तकनीक** 23-29
  शिव पूजन प्रसाद, एम.एफ.ए. एण्ड नेट जुलाई 2018, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **भूमण्डलीकरण और हिन्दी पत्रकारिता** 30-34
  विनय कुमार राय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, (पत्रकारिता विभाग), महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

- **राष्ट्र हित में महामना का योगदान** 35-39
  प्रीति सिंह, शोध छात्रा, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

- **प्रेमचंदोत्तर कहानियों में मध्यवर्ग की अवधारणा** 40-42
  डॉ. नरेन्द्र नारायण राय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. राम मनोहर लोहिया पी.जी. कालेज, भैरव तालाब, वाराणसी (उ.प्र.)

- **महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण : वर्तमान चुनौतियाँ** 43-48
  कविता चौधरी, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
  प्रो. रीता सिंह, महिला महाविद्यालय, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

भूमण्डलीकरण और हिन्दी पत्रकारिता

*विनय कुमार राय**

90 के दशक में सोवियत रूस का विखण्डन और शीतयुद्ध की समाप्ति के समय दुनियाभर में अनेक परिवर्तन हुए जिनसे प्रत्येक देश की नीतियाँ प्रभावित हुयी। इन परिवर्तनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी आर्थिक नीतियों में विश्वव्यापी परिवर्तन जिसके पीछे थी एल0पी0आई0 (L.P.I.) की विश्वव्यापी अवधारणा अर्थात् उदारीकरण (Liberalization), निजीकरण (Privatization) और अंतरराष्ट्रीयकरण (Internationalization)। भारत को इनके प्रभाव में आने के निम्नलिखित कारण थे–

1. आपातकाल के पूर्व का समय।
2. जनता पार्टी की हार के बाद इन्दिरा गाँधी की वापसी।
3. 1982 को ''उत्पादकता वर्ष'' की घोषणा और विश्व बैंक से कर्ज लेना।
4. 90 के दशक में उदारीकरण के नाम पर विदेशी पूँजी का आगमन।

भूमण्डलीकरण :

भारतीय अवधारणा के अनुसार–

अयं निजः परोयेति वचांसि लघुचेतसाम।
उदरचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

जिसका आशय है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुः मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

पाश्चात्य विचारधारा के अनुसार–

अविश्वम् विश्वम् यथा स्यात् तथा इति वैश्वीकरणम्।

अर्थात् जो विश्व नही है, वह जैसे विश्व बन जाय, वैसा करना वैश्वीकरण है। ये एक सतही विचारधारा है।

थॉमस फ्रीडमैन के अनुसार–

''वैश्वीकरण वास्तव में बाजारों, अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकियों का एकीकरण है। यह विश्व का एक ऐसा संकुचन है जिसमें दूरियाँ कोई मायने नहीं रखती और किसी देश की घरेलू राजनीतियों, आर्थिक नीतियों तथा विदेशी सम्बन्धों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूर्णरूपेण हस्तक्षेप रखती है। इस प्रक्रिया में किसी राष्ट्र राज्य को कोई सीमा या बन्धन न बाँध सके जिसमें स्वतंत्र, अबाध और उन्मुक्त व्यापार को प्रश्रय मिले।'' 'भूमण्डलीकरण' की निर्बाध प्रक्रिया ने जो मूलतः परिवर्तन किए वो निम्नवत् हैं यथा :

1. विभिन्न जीवन शैलयों का प्रचार–प्रसार।
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और विज्ञापन संस्कृति का अटूट सम्बन्ध और तज्जनित सार्वभौम मानकीकरण।

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, (पत्रकारिता विभाग), महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

UGC Approved Journal No - 40957
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

Contents

- भारतीय साहित्य में संगीत-कला का महत्व — 381-384
  प्रीति गुप्ता, शोध छात्रा, नृत्य-विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- 'जूठन' में दलित जीवन संघर्ष की चेतना — 385-389
  नेहा विश्वकर्मा, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- वर्तमान समाज में नारी की स्थिति — 390-397
  अनामिका यादव, शोध छात्रा, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- पुतली प्रदर्शन के विविध रंग — 398-404
  रूपा सिंह, शोध छात्रा, नृत्य विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
- अभिज्ञान शाकुन्तलम् में वर्णित पर्यावरण संरक्षण — 405-408
  नीतू यादव
- प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित शूद्र जातियों की स्थिति — 409-412
  डॉ सदानन्द सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर प्राचीन इतिहास विभाग, सुधाकर सिंह फाउण्डेशन महाविद्यालय पिलखिनी, गौराबादशाहपुर, जौनपुर।
- ग्रामीण विकास में समावेशी शिक्षा और आई.सी.टी. — 413-418
  कृष्ण कुमार पाठक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
- भारत में राष्ट्रवाद का उद्भव एवं विकास — 419-425
  आशुतोष शर्मा, एम.ए. (इतिहास), यू.जी.सी.-नेट, शोधार्थी, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर
- रिपोर्टिंग के कलात्मक विज्ञान का दबाव पक्ष — 426-431
  विनय कुमार राय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, (पत्रकारिता विभाग), महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- 'उत्तर जनपद' उपन्यासक वैशिष्ट्य — 432-435
  डॉ. कुमारी दुर्गा कुमारी झा, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, बी.आर.ए.बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
- हरिशंकर परसाई : रचनात्मक परिदृश्य के विविध आयाम — 436-445
  डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, सेण्टेनरी विज़िटिंग फेलो, भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

रिपोर्टिंग के कलात्मक विज्ञान का दबाव पक्ष

विनय कुमार राय*

पत्रकारिता यदि शीघ्रता में लिखा साहित्य है तो रिपोर्टिंग उस साहित्य का रिपोर्ताज है। यहाँ रिपोर्ताज शब्द का तात्पर्य उस साहित्यिक विधा से नहीं सम्बद्ध है जो रेखाचित्र शैली में होती है। यहाँ किसी घटना के यथातथ्य वर्णन को कुछ तकनीकी कार्य यत्न से संक्षिप्त स्वरूप में पूर्णतः प्रस्तुत करना जो कलात्मक रिपोर्ट हो उससे है। आँखों देखी या न्यूज एजेंसी से प्राप्त समाचारों को रिपोर्ट के रूप में यथातथ्य प्रस्तुत करना ही रिपोर्टिंग है। वास्तव में रिपोर्ट की रिपोर्टिंग एक मानवीय पक्ष है जिस प्रकार रिपोर्ट समाचारीय तत्व का हिस्सा है उसी प्रकार रिपोर्टिंग मानवीय गुण का पक्ष है। वर्तमान में रिपोर्ट लेखक को पत्रकार व रचनाकार की दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। उसके लिए यह आवश्यक है कि वह जनसाधारण के जीवन की सच्ची और सही जानकारी रखे और उत्सवों–मेलों, वादों, अकालों, युद्धों और महामारियों जैसे सुख–दुख के क्षणों का स्वयं साक्षी हो, स्वयं नागरिक के तौर पर और एक पत्रकार के भी हैसियत से उसकी रिपोर्ट जनता के मन और लेखन की कला का संयुक्त निदर्शन कराये तो रिपोर्टिंग एक कला रूप को ग्रहण करती है। इस तथ्य को अग्रप्रस्तुत शीर्षकों से समझ सकते हैं यथा :

1. ''पलाश के फूलों की महक जो अब नहीं रही।''
2. ''हरसिंगार के फूलों को किसने झिंझोड़ा।''
3. संगठित आतंकवाद और असंगठित राष्ट्र।''
4. ''अर्जुन ने जीता महाभारत।''
(झारखण्ड में पाँच पाण्डव व तीन विभीषण ने की मुण्डा की राह आसान)
5. ''न खुशी न गम वाह! से चिदम्बरम्''।
6. लालू की रेल में, हर मेल का डिब्बा
7. दूर हुई भ्रांति बिजली क्षेत्र में होगी क्रांति
8. 'कोहली' का 'विराट' प्रदर्शन
9. जाम ही जाम चारों ओर त्राहिमाम।

उपर्युक्त प्रस्तुत शीर्षक साहित्यिक आकर्षण ही नहीं मन–मस्तिष्क पर रेखाचित्र भी अंकित करते हैं, इसमें सूचना के साथ कलात्मकता का भी पुट है इसलिए कहा जा सकता है कि रिपोर्टिंग भाषा विज्ञान की कला है।

जनसंचार के बढ़ते संसाधन और उसके हस्तक्षेप से बदलता हमारा जीवन इस विज्ञान के प्रयोग से कहाँ तक तादात्म्य स्थापित करेगा अभी यह प्रश्न भविष्य के गर्त में है। माउस के एक क्लिक से विश्व की गणो

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, (पत्रकारिता विभाग), महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय